**सरदार पटेल विश्वविद्यालय**

**स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग**

**एम.ए.(हिन्दी) सेमेस्टर-३ (CBCS)**

**२०१७-१८ से २०२०-२१**

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | | क्रेडिट |
|---|---|---|---|
| PA03CHIN21 | भारतीय काव्यशास्त्र और आलोचना | एसाइमेंट / सेमिनार | ०४+१= ५ |
| PA03CHIN22 | हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिककाल के पूर्व) | एसाइमेंट / सेमिनार | ०४+१= ५ |
| PA03CHIN23 | छायावादी काव्य | एसाइमेंट / सेमिनार | ०४+१= ५ |
| PA03EHIN21 | प्रयोजनमूलक कामकाजी हिन्दी (OR) | एसाइमेंट / सेमिनार | |
| PA03EHIN22 | भारतीय साहित्यः सैद्धान्तिक पक्ष | एसाइमेंट / सेमिनार | ०४+१= ५ |
| PA03EHIN23 | मीडिया लेखन और अनुवाद (OR) | एसाइमेंट / सेमिनार | |
| PA03EHIN24 | भारतीय साहित्यः सर्जनात्मक पक्ष | एसाइमेंट / सेमिनार | ०४+१= ५ |
| | | | =२५ |

**अंकविभाजन : पूर्णांक-१००**

| आन्तरिक परीक्षा | बाह्य परीक्षा |
|---|---|
| वस्तुनिष्ठप्रश्न - ०८X१=० | आलोचनात्मक - ०२X१७= ३४ |
| लघुत्तरी प्रश्न - ०६X२=१ | ०१X१८ = १८ |
| एसाइमेंटसेमिनार - ०५+०५=१० | टिप्पणी/व्याख्यात्मक - ०२X०९ = १८ |
| **कुल=३०** | **कुल** = ७० |

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | क्रेडिट |
|---|---|---|
| **PA03CHIN21** | **भारतीय काव्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना** | **०५** |

| | | |
|---|---|---|
| इकाई-१ | **रस सिद्धांत** | |
| | ○ रस का अर्थ और स्वरूप,रस के अंग, रस निष्पत्ति | ०१ |
| | ○ ध्वनि सिद्धांत-ध्वनि का अर्थ एवं परिभाषा, ध्वनि के प्रमुख भेद | |
| इकाई-२ | **अलंकार सिद्धांत** | |
| | ○ अर्थ और परिभाषा, अलंकार के भेद, अलंकार का वर्गीकरण | ०१ |
| | ○वक्रोत्ति का अर्थ एवं परिभाषा, वक्रोत्ति के भेद | |
| इकाई-३ | **हिन्दी कवि आचार्यो का काव्यशास्त्रीय चिंतन** | |
| | ○लक्षण काव्य परम्परा का विकास | ०१ |
| | ○लक्षण काव्य के भेद- सर्वांग निरूपक, विशिष्टांग निरूपक | |
| | ○हिन्दी के प्रमुख कवि आचार्य | |
| इकाई-४ | **आधुनिक हिन्दी आलोचना का विकास** | |
| | ○ आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना | ०१ |
| | ○ पं.हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना | |
| | ○ डॉ.रामविलास शर्मा की आलोचना | |
| इकाई-५ | **गृहकार्य/सेमिनार** | |
| | -काव्यलक्षण, काव्यहेतु, काव्यप्रयोग,काव्यरूप<br>आधुनिक हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ | ०१ |

**संदर्भ ग्रन्थ:**


-भारतीय काव्यशास्त्र डॉ. सत्यदेव चौधरी।

-साहित्यशास्त्र-१,२-डॉ. बलदेव उपाध्याय।

-संस्कृत आलोचना-डॉ. बलदेव उपाध्याय।

-हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास- डॉ. भगीरथ मिश्र।

-हिन्दी आलोचना की बीसबीं शताब्दी- डॉ. निर्मला जैन।

-काव्यशास्त्र के विविध सोपान-डॉ. बद्रीनाथ तिवारी ।

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | क्रेडिट |
|---|---|---|
| **PA03CHIN22** | **हिन्दी साहित्य इतिहास (आधुनिककाल के पूर्व)** | **०५** |
| इकाई-१ | ○इतिहास लेखन की परंपरा,पुनर्लेखन की समस्याएँ<br>○कालविभाजन और नामकरण,आदिकाल की पृष्ठभूमि<br>○आदिकाल का साहित्य एवं प्रवृत्तियाँ | ०१ |
| इकाई-२ | ○भक्ति आन्दोलन का विकास<br>○संत साहित्य के प्रमुख कवि और काव्य प्रवृत्तियाँ<br>○प्रेममार्गी प्रमुखकवि और काव्य प्रवृत्तियाँ | ०१ |
| इकाई-३ | ○रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि और काव्य प्रवृत्तियाँ<br>○कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि और काव्य प्रवृत्तियाँ<br>○रामभक्ति शाखा और कृष्णभक्ति शाखा में अंतर | ०१ |
| इकाई-४ | ○रीतिकाल का कालनिर्धारण और नामकरण<br>○रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि और काव्य प्रवृत्तियाँ<br>○रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि और काव्य प्रवृत्तियाँ | ०१ |
| इकाई-५ | ○गृहकार्य/सेमिनार - गुजरात में हिन्दी साहित्य का विकास (आधुनिक काल के पूर्व) | ०१ |

**संदर्भ ग्रन्थ:**


-हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ना.प्रा.सभा, वाराणसी ।

-हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ.नगेन्द्र, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली ।

-हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास- डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद ।

-हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ. बच्चनसिंह हिन्दी साहित्य अकादमी दिल्ली ।

-हिन्दी साहित्य की भूमिका- पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली ।

-हिन्दी साहित्य का आदिकाल- पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली ।

-हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास- पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी।

-गुजरात की हिन्दुस्तानी काव्यधारा- डॉ. अंबाशंकर नागर, नवजीवन प्रेस,अहमदाबाद ।

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | क्रेडिट |
|---|---|---|
| **PA03CHIN23** | **छायावादी काव्य** | **०५** |

| | | |
|---|---|---|
| इकाई-१ | **कामायनी-जयशंकर प्रसाद**<br>○कामायनी का काव्यसौन्दर्य,कामायनी का काव्यरूप<br>○कामायनी के प्रमुख पात्र,चिन्ता एवं श्रद्धा सर्ग की व्याख्या एव विशेषता | ०१ |
| इकाई-२ | **सरोजस्मृति एवं कुकुरमुत्ता-सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला**<br>○निराला का काव्यसंसार,निराला की काव्यगत विशेषताएँ<br>○चयनित कविताओं (सरोजस्मृति एवं कुकुरमुत्ता)की व्याख्या<br>○चयनित कविताओं की समीक्षा | ०१ |
| इकाई-३ | **नौकाविहार, मौननिमंत्रण और परिवर्तन-सुमित्रानंदन पंत**<br>○पंत का काव्यसंसार,पंत की काव्यगत विशेषताएँ<br>○चयनित कविताओं की व्याख्या,चयनित कविताओं की समीक्षा | ०१ |
| इकाई-४ | **जो तुम आ जाते एक बार,शलभ मैं शापमय वर दूँ,मैं नीर भरी दुःख की बदली, टूटगया वह दर्पण निर्मम,जाग तुझको दूर जाना**<br>**-महादेवी वर्मा**<br>○महादेवीवर्मा की काव्य कृतियाँ<br>○महादेवीवर्मा की काव्यगत विशेषताएँ<br>○चयनित प्रगीतों की व्याख्या,चयनित प्रगीतों की समीक्षा | ०१ |
| इकाई-५ | ○ **एसाइमेंट/सेमिनार**<br>भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय, हरिऔध, श्रीधर पाठक, हरिवंशराय बच्चन, बालकृष्णशर्मा नवीन । | ०१ |

**संदर्भ ग्रन्थ**


-प्रसाद साहित्य -डॉ. प्रेमशंकर तिवारी।

-कामायनीः अध्ययन की समस्याएँ- डॉ. नगेन्द्र।

-कामायनी की आलोचना पक्रियाँ- डॉ. गिरजा राय।

-कामयनी महाकाव्य- डॉ. युगेश्वर-जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

-सुमित्रानंदन पंत- पं. नन्ददुलारे बाजपेयी।

-महीयसी महादेवी- डॉ. गंगा प्रसाद पाण्डेय ।

-निराला की साहित्य साधना-रामविलासशर्मा ।

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | क्रेडिट |
|---|---|---|
| **PA03EHIN21** | **प्रयोजनमूलक कामकाजी हिन्दी** | **०५** |

| | | |
|---|---|---|
| इकाई-१ | ○प्रयोजनमूलक हिन्दी: अवधारणा-स्वरूप<br>○प्रयोजनमूलक हिन्दी: कार्यक्षेत्र परिव्याप्ति<br>○कार्यालयी हिन्दी: स्वरूप,कार्यलयी हिन्दी: व्यवहार-क्षेत्र | **०१** |
| इकाई-२ | ○पारिभाषिक शब्दावली: स्वरूप एवं महत्व<br>○पारिभाषिक शब्दावली: निर्माण-प्रक्रिया<br>○विशिष्टपारिभाषिक शब्द | **०१** |
| इकाई-३ | ○पत्रकारिता: स्वरूप एवं इतिहास<br>○पत्रकारिता के प्रकार<br>○पत्रकारिता की उपयोगिता | **०१** |
| इकाई-४ | ○सम्पादन-कला: स्वरूप<br>○सम्पादन के तत्व, संपादन प्रक्रिया<br>○प्रमुख प्रेस कानून | **०१** |
| इकाई-५ | ○एसाइमेंट/सेमिनार-दैनिक व्यवहार में प्रयोजनमूलक हिन्दी की उपयोगिता<br>रोजगार में प्रयोजनमूलक हिन्दी, सूचना और समाचार पत्र, विज्ञापन और समाचार पत्र | **०१** |

**संदर्भ ग्रन्थ**


-प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ।

-प्रयोजनमूलक हिन्दी- विनोद गोदरे।

-कार्यालयी हिन्दी- भोलनाथ तिवारी।

-प्रयोजनमूलक हिन्दी: विविध परिदृश्य- डॉ. रामचंन्द्र त्रिपाठी तथा प्रमिला अवस्थी ।

-प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध आयाम- डॉ. मायासिंह- जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

**OR (अथवा)**

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | क्रेडिट |
|---|---|---|
| **PA03EHIN22** | **भारतीय साहित्यः सैद्धान्तिक पक्ष** | **०५** |
| इकाई-१ | ○भारतीय साहित्य का स्वरूप,भारतीयता का समाजशास्त्र<br>○ हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति | **०१** |
| इकाई-२ | ○भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब<br>○ भारतीय साहित्य की अध्ययन की समस्याएँ | **०१** |
| इकाई-३ | ○हिन्दीत्तर साहित्य का अध्ययन- उर्दू भाषा साहित्य का अध्ययन | **०१** |
| इकाई-४ | ○बंगला साहित्य का इतिहास | **०१** |
| इकाई-५ | ○भारत में भारतीय साहित्य की उपयोगीता<br>○ भारतीय साहित्य में हिन्दी साहित्य की भूमिका | **०१** |

**संदर्भ ग्रन्थ**


-आज का भारतीय साहित्यः साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

-भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ- डॉ. रामविलासशर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

-उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहासः राहतेशाम हुसैन, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

-बंगला साहित्य का इतिहासः सुकुमार सैन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

-भारतीय साहित्य का समेकित इतिहासः डॉ. नगेन्द्र साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | क्रेडिट |
|---|---|---|
| **PA03EHIN23** | **मीडिया लेखन एवं अनुवाद** | ०५ |

| | | |
|---|---|---|
| इकाई-१ | ○जन संचार प्रौद्योगिकी- चुनौतियाँ स्वरूप<br>○रेडियो नाटक, रेडियो की मौखिक प्रवृत्ति<br>○सामान्य लेखन एवं वाचन | ०१ |
| इकाई-२ | ○टेलीविजन-भाषा प्रकृति /पटकथा लेखन / टैलीड्रामा<br>○साहित्य का विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपान्तरण/ विज्ञापन की भाषा। | ०१ |
| इकाई-३ | ○अनुवाद का स्वरूप, अनुवाद की प्रविधि एवं प्रक्रिया,<br>○अनुवादः पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन | ०१ |
| काई-४ | ○कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद /सारानुवाद /विज्ञापन में अनुवाद | ०१ |
| इकाई-५ | ○साहित्य के विकास में मीडिया का योगदान<br>अनुवाद की व्यवहारिक समस्या | ०१ |

**संदर्भ ग्रन्थ**


-प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ।

-प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. लक्ष्मीकांत पांण्डेय प्रमिला अवस्थी।

-प्रयोजनमूलक हिन्दीः विविध परिदृश्य- डॉ. रमेशचन्द्र त्रिपाठी।

-प्रयोजनमूलक हिन्दी- रमेश जैन।

**OR (अथवा)**

| पाठ्यक्रम कोड | पाठ्यक्रम का नाम | क्रेडिट |
|---|---|---|
| **PA03EHIN24** | **भारतीय साहित्यः सर्जनात्मक पक्ष** | ०५ |
| इकाई-१ | ○उपन्यास - जंगल के दावेदार (बंगला-महाश्वेता देवी)<br>-आलोचनाः कथाविधान, पात्र सृष्टि, समस्याएँ | ०१ |
| इकाई-२ | ○कविता-संग्रहः -बीच का रास्ता नहीं होता (पंजाबी-पाश)<br>-आलोचना- संवेदना, काव्य संदर्भ | ०१ |
| इकाई-३ | ○नाटक -मृच्छकटिकम् (संस्कृत-शूद्रक)<br>-कथावस्तु, पात्रसृष्टि, समस्याएँ | ०१ |
| इकाई-४ | ○उर्दू काव्य संग्रह<br>-संम्पादक- डॉ. मोहन अवस्थी | ०१ |
| इकाई-५ | ○गृहकार्य/सेमिनार<br>-जंगल के दावेदार/बीच का रास्ता नहीं होता/मृच्छकटिकम्/उर्दू काव्य संग्रह | ०१ |